

# पाठ-३

## षट् आवश्यक

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर



99260-40137

# सभी जीव -

☸ सुख चाहते हैं

☸ दुःख से डरते हैं

☸ दुःख से बचने के लिये उपाय भी करते हैं

☸ परंतु, सही उपाय नहीं जानते

☸ अतः दुःखी ही रहते हैं

# दुःख से बचने का सच्चा उपाय क्या है ?

❁ आत्मा को समझकर उसमें लीन होना ही  
सच्चा उपाय है

❁ और यही निश्चय से आवश्यक कर्तव्य है ।

**आवश्यक = अवश्य करने योग्य**

# श्रावक के आवश्यक

```
graph TD; A[श्रावक के आवश्यक] --> B[निश्चय आवश्यक]; A --> C[व्यवहार-आवश्यक]; B --> D[श्रावक की आंशिक शुद्धि]; C --> E[साथ-साथ के शुभ विकल्प];
```

निश्चय आवश्यक

व्यवहार-आवश्यक

श्रावक की  
आंशिक शुद्धि

साथ-साथ के  
शुभ विकल्प

# व्यवहार-आवश्यक के छह प्रकार

गुरु उपासना

संयम

दान

देवपूजा

स्वाध्याय

तप

# देवपूजा



```
graph TD; A[देवपूजा] --> B[भाव-पूजा]; A --> C[द्रव्य-पूजा];
```

भाव-पूजा

द्रव्य-पूजा

# देवपूजा

❁ सच्चे देव का स्वरूप समझकर उनके गुणों का स्तवन ही भाव-देवपूजा है ।

❁ ज्ञानी श्रावक वीतरागता और सर्वज्ञता आदि गुणों का स्तवन करते हुए विधिपूर्वक अष्ट द्रव्य से पूजन करते हैं, उसे द्रव्य-पूजा कहते हैं ।



# गुरु उपासना

❁ गुरु का सच्चा स्वरूप समझकर उनकी उपासना करना ही गुरु उपासना है।

❁ उनके प्रति बहुमान आना

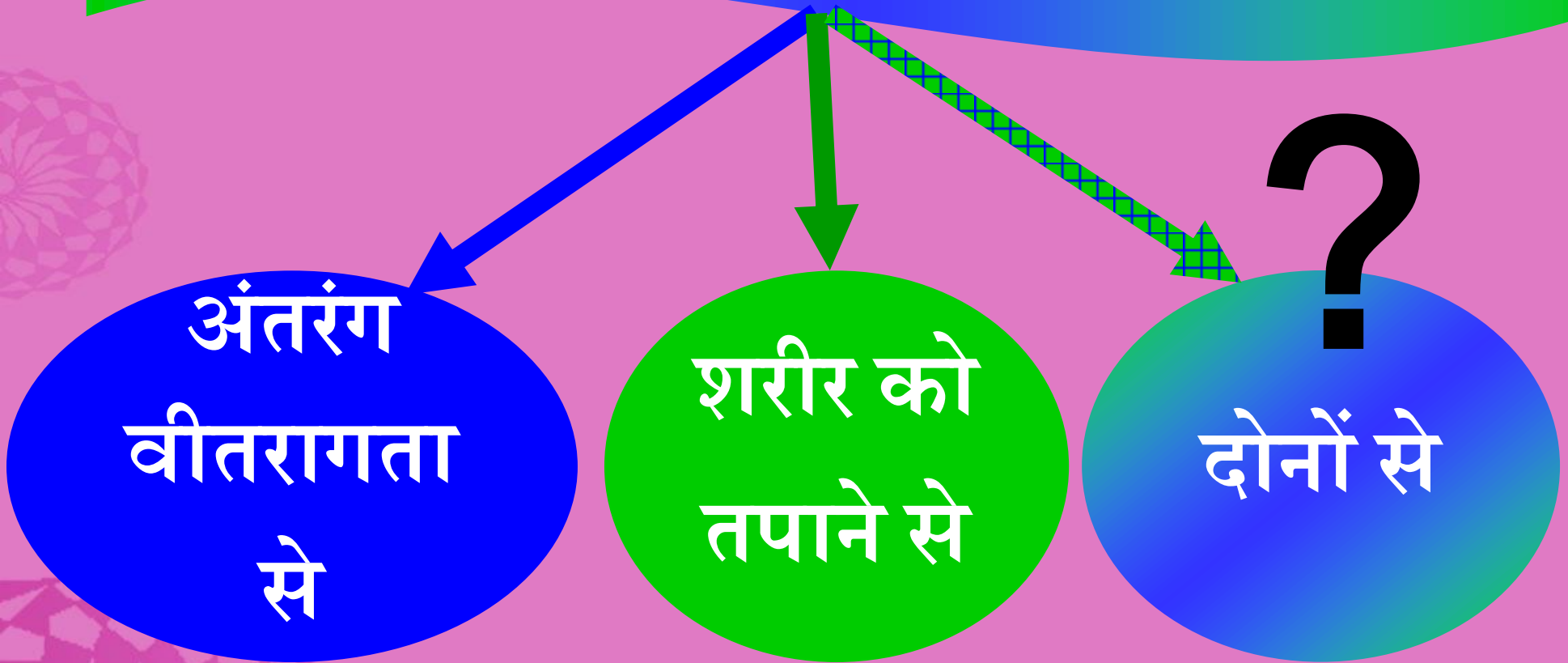
❁ स्वयं वैसा बनने की भावना होना



# गुरु की महिमा क्यों?

- ❁ वीतरागता का मार्ग बतलाने वाले
- ❁ स्वयं उस पर चलकर बतलाते हैं
- ❁ जीवंत उपदेश देने वाले (शाब्दिक उपदेश तो शास्त्र से भी मिल सकता)
- ❁ यही सच्ची गुरु-उपासना है

# गुरु की महिमा किससे है?



# स्वाध्याय

❁ जिनेन्द्र भगवान द्वारा कहे गये तत्त्व  
का निरूपण करनेवाले शास्त्रों का  
अध्ययन, मनन करना स्वाध्याय है ।

# स्वाध्याय की महानता

❁ वीतरागता के मार्ग को समझने के लिये

❁ मन को शुभ विकल्पों में ज्यादा देर  
अटकाने के लिये

❁ वर्तमान में देव का तो अभाव है

❁ गुरु का योग कभी-कभी बनता है

❁ शास्त्र - निरंतर उपलब्ध हैं

# स्वाध्याय के भेद

वांचना

पृच्छना

अनुप्रेक्षा

आम्नाय

धर्मोपदेश

# स्वाध्याय के भेदों का स्वरूप

वांचना

पढ़ना / सुनना

पृच्छना

विनयपूर्वक शंका, प्रश्न पूछना

अनुप्रेक्षा

चिंतन कर, निर्णय करना

आम्नाय

पुनः पुनः दोहराना

धर्मोपदेश

अन्य को उपदेश देना, बताना,  
समझाना, लिखना

# स्वाध्याय में आवश्यक व्यवहार विनय

- ❁ शास्त्र जी को बिना नहाये, बिना हाथ धोये नहीं छूना चाहिये
- ❁ जहाँ-तहाँ बैठ उपन्यास जैसे नहीं पढ़ना चाहिये
- ❁ उठाते-रखते समय सावधानी रखना चाहिये
- ❁ स्वाध्याय के लिये मंदिर श्रेष्ठ स्थान है
- ❁ वहाँ नहीं जा सकते तो घर में एकांत में जहाँ जूते चप्पल न ले जाते हैं, ऐसे शुद्ध स्थान में स्वाध्याय करें



# स्वाध्याय में आवश्यक व्यवहार विनय

- ❁ शास्त्र जिस-किसी समय पढ़ना योग्य नहीं
- ❁ जब अन्य कार्यों से किंचित् मुक्ति मिले तब पढ़ें
- ❁ रूढ़ि पूरी करने के लिये न पढ़ें, वो तो दण्ड हैं
- ❁ समझकर पढ़ें
- ❁ चिंतन कहीं भी बैठकर, किसी भी अवस्था में,  
किसी भी समय कर सकते हैं (24 घंटे)

# संयम

```
graph TD; A([संयम]) --> B([इन्द्रिय संयम]); A --> C([प्राणी संयम]); B --> D[इन्द्रिय और मन के विषय में प्रवृत्ति की अभिलाषा न करना]; C --> E[षट् काय के जीवों की हिंसा का त्याग करना];
```

## इन्द्रिय संयम

इन्द्रिय और मन के  
विषय में प्रवृत्ति की  
अभिलाषा न करना

## प्राणी संयम

षट् काय के जीवों की  
हिंसा का त्याग करना

इन्द्रिय  
संयम



6 प्रकार



5 इन्द्रिय

1 मन

प्राणी  
संयम



6 प्रकार



5 स्थावर काय

1 त्रस काय

तप

इच्छाओं का निरोध

निरोध क्या?

दबाना

उत्पन्न न होना

इच्छाओं की उत्पत्ति न होना ही तप है

# दान

- स्व और पर के उपकार के लिये
- निज की वस्तु का
- योग्य पात्र को
- देना

## स्व का उपकार



- ❁ लोभवृत्ति कम होती है
- ❁ आत्मा त्याग की तरफ झुकता है
- ❁ पुण्यबंध होता है

## पर का उपकार



- ❁ जीवन-यात्रा में मदद
- ❁ धर्मसाधना में सहायता



# दान के प्रकार



```
graph TD; A[दान के प्रकार] --- B[आहार]; A --- C[ज्ञान]; A --- D[औषधि]; A --- E[अभय];
```

आहार

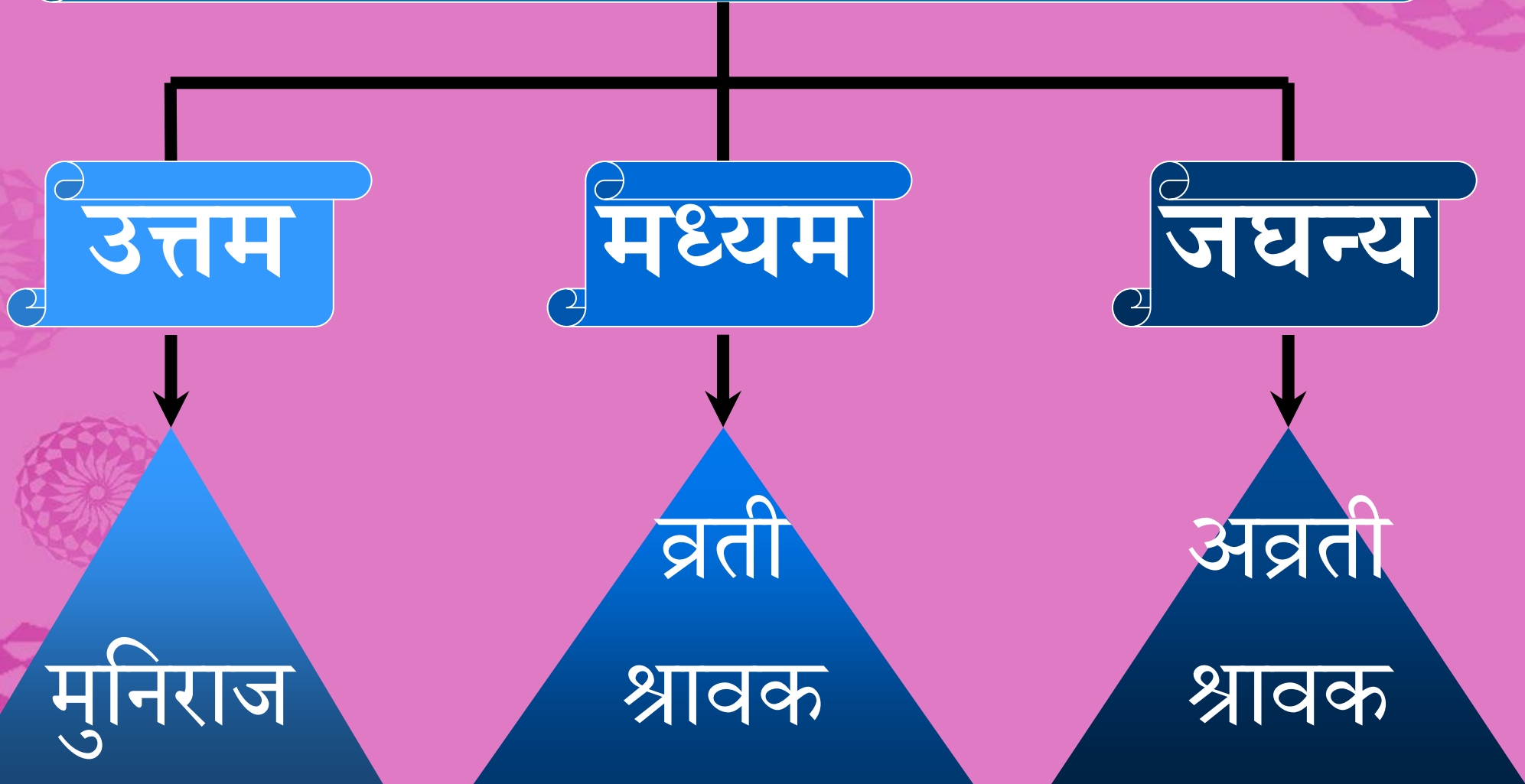
ज्ञान

औषधि

अभय



# पात्र के प्रकार



# अन्य प्रकार के पात्र

- ❁ **कुपात्र** - आत्मज्ञान से रहित बाह्य क्रिया-काण्ड से मोक्ष मानने वाले भेषधारी
- ❁ **अपात्र** - पाँच पापों में लिप्त, सप्त व्यसनी
- ❁ **दया दान** - मात्र दया भाव से दिया गया